शंसत मे प्रियम्; R. Schl. II. 68. 8.: माचा ’स्मै पितरम् मृतम् भवन्तः शंसिषुः; Su. 3. 11.: सुन्दोपसुन्दयोः कर्म ... शशंसिरे. 2) laudare. Bh. 5. 1.: पुनर् योगञ्च शंससि; Mah. 2. 2298.: शशंसुर् द्रौपदीन् तत्र कुर्वन्तो धृतराष्ट्रजम्. (Cf. शास्. Fortasse lith. *sakau* dico, loquor, litteris transpositis e *kasau*; ita etiam germ. vet. *sagên* dicere, anglo-sax. *sagan, sægan,* cum *g* pro *h*, quod pro श् = क् exspectaveris. Cf. etiam *SANG* canere (v. Graff. 6. 91.). Pottius huc refert lat. *cano* (v. क्वण्), *Cas-menæ, Ca-menæ, car-men.* Cum शंस् conferatur etiam pers. خواندن *kân-den* recitare, cantare, nisi pertinet ad क्वण् vel स्वन्, v. gr. comp. 35. De خواستن *kâs-ten* cupere v. 2. शंस्.)

c. अभि calumniari, conviciari, maledicere, objurgare, accusare, criminari; अभिशस्त increpatus. Man. 8. 116.: वत्सस्या ’भिशस्तस्य पुरा भ्रात्रा यवीयसा; Am. III. 1. 43.: आक्षारितः क्षारितो ऽभिशस्ते; Man. 2. 185.: अभिशस्तांस् तु वर्जयेत्; 3. 159.

c. आ 1) indicare. Ragh. 1. 86. 2) implorare. Dr. 5. 12.: आशंस ... सौवीरराजस्य पुनः प्रसादम्.

c. प्र laudare, celebrare. N. 1. 16. 3. 16.

c. प्र praef. अभि *id.* A. 1. 6.

2. शंस् 1. *A. interdum P.* (इच्छायाम् *K.* आशिषि *V.*; scribitur शास्, gr. 110[a].) cupere, desiderare, fausta precari. (V. शास् praef. आ et cf. pers. خواستن *kâs-ten* cupere, velle, rogare, خواهم *kâh-em* cupio etc., hib. *sant* «greediness, covetousness, cupidity, lust», *santaighim* «I desire, covet, lust» v. Pictet p. 64.; lat. *censeo,* v. praef. आ sgf. 3.)

c. आ 1) cupere, desiderare. Mah. 1. 7148.: कुरुप्रवीरान् आशंसमानः ... जगाम ताम् भार्गविकर्मशालां यत्रा ’सते ते कुरुप्रवीराः; 3. 17171.: योद्धुम् आशंसते नित्यम् फाल्गुनेन. 2) sperare. Br. 1. 29.: यया दौहित्रजाँल् लोकान् आशंसे; Mah. 3. 13647.: आशंसते हि पुत्रेषु पिता ... यशः. *Cum dat.* Mah. 1. 148.: ना ’शंसे विजयाय. *Cum infin.* R. Schl. II. 12. 70.: न ... चिरञ् जीवितुम् आशंसे. *Atm.* Dr. 5. 5.: जेतुम् आशंससि धर्मराजम्. 3) credere, putare, *c.* यदि. R. Schl. II. 51. 14.: कौशल्याचै ’व राजाच तथै ’व जननी मम ना ’शंसे यदि जीवन्ति; II. 86. 15.: ना ’शंसे यदि ते सर्वे जीवेयुः.

शंसिन् (r. शंस् s. इन्) dicens, indicans, nuntians. Ur. 69. 15. Sak. 46. 15.

शंस्त् 2. *P.* (scribitur शस्त्) dormire. *Vid.* 2. शस्.

शक् 5. *P.* et 4. *P. A.* posse, valere. H. 1. 6.: गन्तुञ्चै ’व न शक्नुमः; R. Schl. I. 20. 4.: न हि शक्नोति ... समाप्तुङ् क्रतुम्; Br. 1. 24.: न हि शक्ष्यामि किञ्चन परित्यक्तुम् अहम् बन्धुम्; 27.: परित्यक्तुन् न शक्यामि भार्याम्; 28.: कुत एव परित्यक्तुं सुतं शक्यामि; N. 11. 6.: शक्यसे ता गिरः सत्याः कर्तुम् मयि; A. 3. 31.: नचै ’नम् अशकं हन्तुम्. *Cum locat. abstracti in* अन *loco infin.* R. Schl. I. 66. 19.: न शेकुर् ग्रहणे तस्य धनुषः; N. 7. 10.: सुहृदान् न तु कश्चन निवारणे ऽभवच् छक्तो दीव्यमानम्. *Participia in* त *sunt* शक्त *et* शकित, *quorum prius active cum sgf.* potens, *alterum passive usurpatur.* Br. 2. 8. N. 7. 10. H. 4. 33. — *Pass. impers.* Mah. 1. 6678.: स्थीयतां यदि शक्यते. — *Notetur Passivi usus in constructione cum Infin., quippe qui passivâ formâ careat, ita ut passivam vim verbo auxiliari exprimere necesse sit. Dicitur e. c.* ना ’हर्तुं शक्यते (N. 20. 5.) *quasi latine dicas* afferre nequitur *ad exprimendum* non afferri potest. *Part. fut. pass.* शक्य *saepissime in hujusmodi constructionibus invenitur, e. c.* In. 1. 17. 2. 4. H. 1. 35. 47. *Etiam part. praet.* शकित. H. 4. 33.: अपनेतुञ्च यतितो नचै ’व शकितो मया. *Dicitur etiam* शक्य *pro* जेतुं शक्य qui vinci potest, vincendus. Dr. 5. 12. — *Desid.* शिक्ष् correptum e शिशक्ष्, v. gr. 552. (V. शिक्ष् et cf. hib. *ceach-t* «power, eminence» = शक्ति, v. Pictet p. 63. Fortasse lat. *co-nâ-ri* e *coc-na-ri,* ita ut ना respondeat characteri nonae classis et graeco νη in verbis ut δάμ-νη-μι; *queo*; cf. *ne-qui-nont* apud Fest. cum शक्-नुवन्ति; island. vet. *hag-r* dexter, *hagna* prodesse, *hoegja* moderare (Grimm. II.